Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री सत्यनारायण संपूर्ण व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ प्रथम अध्याय: नारद का प्रश्न ॥

पाँचों प्रचलित अध्यायों की मुख्य घटनाओं सहित सरल हिंदी पुनर्कथा। अलग पुस्तकों में शब्द, पात्रों के नाम और फलश्रुति का विस्तार भिन्न हो सकता है।

नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषियों ने सूतजी से पूछा, “इस समय साधारण गृहस्थ भी श्रद्धा से कौन-सा व्रत कर सकते हैं? ऐसा उपाय बताइए जिससे मनुष्य ईश्वर का स्मरण और अच्छे कर्मों का संकल्प कर सके।” सूतजी ने नारद और भगवान विष्णु का संवाद सुनाना शुरू किया।

एक बार देवर्षि नारद पृथ्वी पर आए। लोगों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों में देखकर वे चिंतित हुए। वे वैकुण्ठ पहुँचे और भगवान विष्णु से बोले, “प्रभु, मनुष्यों की सहायता के लिए कोई सरल पूजा बताइए जिसे परिवार मिलकर कर सके।”

भगवान ने कहा, “मेरे सत्यनारायण स्वरूप का व्रत और पूजन श्रद्धा से किया जाए। सत्य बोलना, मन को शांत रखना और प्रसाद सबके साथ बाँटना इसका भाव है। किसी एक दिन या पूर्णिमा पर परिवार तथा मित्रों के साथ पूजा की जा सकती है।” नारद ने सामग्री, समय और पहले व्रत करने वालों के विषय में पूछा।

विष्णुजी ने बताया कि साफ स्थान पर जल, फूल, फल और सात्त्विक नैवेद्य रखकर पूजा करें। कथा सुनें, आरती करें और प्रसाद ग्रहण करके दूसरों को भी दें। साधन कम हों तो भी उपलब्ध सामग्री और सच्चे मन से प्रार्थना की जा सकती है। नारद ने प्रणाम करके यह संदेश लोगों तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

॥ इति प्रथम अध्याय ॥

॥ द्वितीय अध्याय: ब्राह्मण और लकड़हारा ॥

सूतजी ने आगे कहा कि काशी में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह रोज़ अपनी आजीविका के लिए निकलता, पर कभी पर्याप्त भोजन भी नहीं जुटा पाता। एक दिन भगवान विष्णु वृद्ध ब्राह्मण का रूप लेकर उससे मिले और उसकी चिंता सुनी। उन्होंने उसे श्री सत्यनारायण व्रत की सरल विधि बताई।

ब्राह्मण ने मन में निश्चय किया कि जो कुछ उपलब्ध होगा, उसी से पूजा करेगा। अगले दिन उसे इतना मिला कि वह कुछ फल और पूजा की सामग्री ले सका। उसने अपने घर में परिवार और परिचितों को बुलाया, भगवान का स्मरण किया, कथा सुनी और सबको प्रसाद बाँटा। कथा में उसके जीवन में धीरे-धीरे सहजता आने का वर्णन है।

एक दिन उस ब्राह्मण के घर एक वृद्ध लकड़हारा आया। उसने पूजा देखी और विनम्रता से पूछा कि यह क्या है। ब्राह्मण ने व्रत का भाव और विधि समझाई। लकड़हारे ने भी प्रसाद ग्रहण किया और सोचा कि अपनी कमाई में से कुछ भाग रखकर वह परिवार सहित पूजा करेगा।

अगले दिन लकड़हारे को लकड़ी का अच्छा मूल्य मिला। वह केले, दूध, घी, शक्कर और उपलब्ध सामग्री लेकर घर लौटा। उसने अपने परिवार को बुलाकर भगवान सत्यनारायण का पूजन किया और प्रसाद बाँटा। कथा में दोनों परिवारों की श्रद्धा तथा दूसरों से सीखी अच्छी बात को अपनाने का भाव है।

॥ इति द्वितीय अध्याय ॥

॥ तृतीय अध्याय: साधु वैश्य का संकल्प ॥

भद्रशीला नदी के किनारे राजा उल्कामुख अपनी पत्नी के साथ श्री सत्यनारायण का व्रत कर रहे थे। वहाँ नाव से आया साधु नाम का एक व्यापारी रुका। उसने राजा से पूजा के बारे में पूछा। राजा ने विधि बताई तो व्यापारी ने भी व्रत करने का संकल्प लिया और घर लौटकर पत्नी लीलावती से यह बात कही।

कुछ समय बाद उनके घर पुत्री का जन्म हुआ, जिसका नाम कलावती रखा गया। लीलावती ने पति को उसका संकल्प याद दिलाया। साधु वैश्य ने कहा, “पुत्री के विवाह के समय पूजा करूँगा।” समय बीता; कलावती बड़ी हुई और उसका विवाह एक व्यापारी युवक से हो गया। फिर भी साधु अपना वचन निभाना टालता रहा।

व्यापार के लिए साधु और उसका दामाद समुद्र तट के पास राजा चन्द्रकेतु के नगर पहुँचे। उसी दौरान राजा का धन चुराकर भागता एक चोर चोरी का सामान उनकी नाव के पास छोड़ गया। राजकर्मियों ने सामान देखकर दोनों को दोषी मान लिया। बिना पूरी जाँच के दोनों को बंदी बना लिया गया।

घर पर लीलावती और कलावती को भी कठिन समय का सामना करना पड़ा। एक दिन कलावती ने किसी ब्राह्मण के घर सत्यनारायण पूजा और कथा सुनी। उसने प्रसाद लेकर माँ को बताया। तब लीलावती ने परिवार और परिचितों के साथ पूजा की तथा पति और दामाद के सकुशल लौटने की प्रार्थना की।

॥ तृतीय अध्याय जारी ॥

॥ तृतीय अध्याय: बंदियों की मुक्ति ॥

कथा में आता है कि राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में संकेत मिला कि जिन दो व्यापारियों को बंदी बनाया गया है वे निर्दोष हैं। सुबह राजा ने उनके मामले पर फिर विचार किया, उन्हें मुक्त कराया और उनका धन लौटाया। उसने अपनी भूल के लिए खेद प्रकट किया।

साधु वैश्य और उसका दामाद घर की ओर चल पड़े। दोनों ने अनुभव किया कि संकल्प को बार-बार टालना और बिना जाँच आरोप लगाना उचित नहीं। परिवार से मिलने की आशा लेकर वे नाव में आगे बढ़े।

अध्याय का भाव

इस प्रसंग में लीलावती और कलावती की आशा, सत्य की खोज और न्याय का महत्व उभरता है। कथा में कठिनाई का कारण व्रत की उपेक्षा बताया गया है; वास्तविक जीवन में किसी की गरीबी या कानूनी परेशानी को पूजा की कमी का दंड न समझें।

दोष सिद्ध करने से पहले तथ्य जाँचना और भूल होने पर उसे सुधारना इस कथा से मिलने वाली व्यवहारिक सीख है।

॥ इति तृतीय अध्याय ॥

॥ चतुर्थ अध्याय: सत्य का स्मरण ॥

घर लौटते समय एक दण्डी साधु के रूप में भगवान सत्यनारायण ने साधु वैश्य से पूछा, “तुम्हारी नाव में क्या है?” व्यापारी ने धन छिपाने के लिए उपहास में कहा, “केवल पत्ते हैं।” कुछ देर बाद उसने देखा कि नाव का सामान सचमुच पत्तों के समान दिखाई दे रहा है। वह घबरा गया।

दामाद ने उसे याद दिलाया कि उसने असत्य कहा था। व्यापारी वापस उस साधु के पास पहुँचा, अपनी बात स्वीकार की और क्षमा माँगी। कथा में कहा जाता है कि उसका धन पहले जैसा हो गया। उसने मन से पूजा करने का निश्चय किया और यात्रा फिर शुरू की।

नगर के निकट पहुँचकर उसने घर समाचार भिजवाया। लीलावती और कलावती उस समय पूजा कर रही थीं। लीलावती ने पूजा पूरी की और पति से मिलने चली गई। उत्सुकता में कलावती प्रसाद ग्रहण किए बिना ही अपने पति से मिलने निकल पड़ी।

तट पर पहुँचकर उसे पति और नाव दिखाई नहीं दिए। परिवार बहुत चिंतित हुआ। कथा में संकेत मिला कि कलावती पूजा का प्रसाद छोड़कर आई थी। उसने घर जाकर प्रसाद ग्रहण किया, फिर लौटकर पति को सुरक्षित पाया। सभी ने साथ में भगवान को धन्यवाद दिया।

॥ चतुर्थ अध्याय जारी ॥

॥ चतुर्थ अध्याय: कथा की सीख ॥

असत्य से पश्चाताप तक

व्यापारी के कथानक में धन बचाने के लिए कहा गया झूठ और उसे स्वीकार कर सुधारने का प्रसंग है। कलावती के हिस्से में पूजा को पूरा ध्यान देने और प्रसाद साझा करने की परंपरा आती है। परिवार फिर मिलकर भगवान सत्यनारायण का पूजन करता है।

कथा में नाव का लुप्त होना और लौट आना अलौकिक वर्णन है। इसे किसी प्रियजन के लापता होने का वास्तविक कारण न मानें। ऐसी स्थिति में तुरंत उचित सहायता लें।

प्रसाद का भाव

प्रसाद घर और समुदाय के साथ बाँटने का माध्यम है। पूजा पूरी करके सबको सम्मान देना इस प्रसंग का सरल संदेश है। कोई प्रसाद स्वास्थ्य, एलर्जी या अन्य कारण से न ले सके तो उसे दोषी न ठहराएँ।

साधु वैश्य ने अपने परिवार और मित्रों के साथ फिर कथा सुनी, आरती की और प्रसाद बाँटा।

॥ इति चतुर्थ अध्याय ॥

॥ पंचम अध्याय: राजा तुंगध्वज ॥

सूतजी ने अंतिम प्रसंग सुनाया। तुंगध्वज नाम का राजा एक दिन वन से लौट रहा था। उसने कुछ ग्वालों को श्रद्धा से श्री सत्यनारायण का पूजन करते देखा। ग्वालों ने उसे प्रसाद दिया, लेकिन राजा ने अभिमान के कारण उनकी पूजा की उपेक्षा की और प्रसाद स्वीकार किए बिना चला गया।

कथा के अनुसार राजा जब नगर लौटा तो उसे अपने पुत्रों और धन-धान्य के नष्ट होने का दुखद समाचार मिला। उसने विचार किया कि ग्वालों का अपमान करना उचित नहीं था। वह उनके पास लौटा, अपनी भूल स्वीकार की, उनके साथ पूजा में बैठा और प्रसाद सम्मान से ग्रहण किया। कथा में उसकी पूर्व स्थिति लौट आने का वर्णन है।

अंत की फलश्रुति में पहले ब्राह्मण को अगले जन्म का सुदामा, उल्कामुख को दशरथ, साधु वैश्य को मोरध्वज, तुंगध्वज को स्वयंभू मनु और लकड़हारे को गुह बताया गया है। यह धार्मिक पुनर्जन्म प्रसंग है। अलग पुस्तकों में इसका विस्तार बदलता है।

कथा समाप्त होने पर परिवार भगवान सत्यनारायण की आरती करता है, प्रसाद बाँटता है और सबके लिए सुख-शांति की प्रार्थना करता है। धार्मिक फल आस्था का विषय है; किसी घटना के निश्चित परिणाम की गारंटी नहीं।

॥ इति पंचम अध्याय । श्री सत्यनारायण व्रत कथा समाप्त ॥